Topic 1 :– ईगलनेस्ट वन्यजीव अभयारण्य

चर्चा में क्यों :– हाल ही में, अरुणाचल प्रदेश में अवस्थित ईगलनेस्ट वन्यजीव अभयारण्य में लाल पांडा को देखा गया।

लाल पांडा :– यह एक छोटा स्तनपायी जीव है। यह मुख्यत 2,200 से लेकर 4,800 मीटर की ऊंचाई पर मुख्य रूप से बांस की घनी झाड़ियों वाले मिश्रित पर्णपाती और शंकुधारी वनों में अधिक मात्रा में पाया जाने वाला जीव है।

भारत में इसके मुख्य पर्यावासः स्थल :– अरुणाचल प्रदेश में हिमालय के समशीतोष्ण वन, पश्चिम बंगाल, मेघालय, और सिक्किम ।

किन किन देशों में पाया जाता है :– भारत, भूटान, नेपाल, म्यांमार और चीन

संरक्षण की स्थितिः

CITES: परिशिष्ट-।

वन्यजीव संरक्षण अधिनियमः अनुसूची-।

IUCN स्थितिः एडेंजर्ड

लाल पांडा के लिए खतरे :-

1.जंगली कुत्तों द्वारा शिकार किया जाना

2. पर्यावास का विखंडन और क्षरण हो जाना

3. हंटिंग और अवैध शिकार होना ।

ईगलनेस्ट वन्य अभयारण्य (Eaglenest Wildlife Sanctuary)

यह अभयारण्य भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में
अवस्थित है । यह अभयारण्य अरुणाचल प्रदेश राज्य के पश्चिम कमेंग ज़िले में बोमडिला के समीप हिमालय की तलहटी में स्थित है ।यह क्षेत्र संरक्षित क्षेत्र घोषित किया जा चुका है।

यह अभयारण्य पूर्व में पक्के बाघ अभयारण्य (कामेंग नदी) और पूर्वोत्तर में सेस्सा ऑर्किड अभयारण्य से लगा हुआ है

अरुणाचल प्रदेश में पाए जाने वाले अन्य संरक्षित क्षेत्र:

मौलिंग नेशनल पार्क
ईटानगर वन्यजीव अभयारण्य
पक्के बाघ अभयारण्य
कमलांग वन्यजीव अभयारण्य

अरुणाचल प्रदेश के वन्यजीव अभयारण्य

कामलांग वन्यजीव अभयारण्य, मियाओ
ईगल नेस्ट वन्यजीव अभयारण्य, सेजोसा
पखुई वन्यजीव अभयारण्य, सेजोसा
मेहाओ वन्यजीव अभयारण्य, रोइंग
केन वन्यजीव अभयारण्य, अलोंग
ईटानगर वन्यजीव अभयारण्य, नहरलगुन
डा॰ डी इरिंग मेमोरियल वन्यजीव अभयारण्य, पासीघाट

अरुणाचल प्रदेश के राष्ट्रीय पार्क

Result Mitra

मोलिंग नेशनल पार्क, जेंगिंग
दिहांग देबांग बायोस्फीयर रिजर्व, दिबांग घाटी
नामधापा नेशनल पार्क, मियाओ
सेसा आर्किड अभयारण्य, टीपी

प्रश्न. निम्नलिखित नेशनल पार्कों में से किस एक की जलवायु उष्णकटिबंधीय से उपोष्ण, शीतोष्ण और आर्कटिक तक परिवर्तित होती है??

(a) कंचनजंघा नेशनल पार्क
(b) नंदादेवी नेशनल पार्क
(c) न्योरा वैली नेशनल पार्क
(d) नामदफा नेशनल पार्क

उत्तर: (d)

Result Mitra

Topic 2 :– भारत तथा चाबहार बंदरगाह

चर्चा में क्यों:- हाल ही में भारत और ईरान के मध्य चाबहार बंदरगाह को विकसित और ऑपरेशनल करने के लिए 10 वर्ष का अनुबंध किया गया है

यह समझौता ईरान ने शाहिद बेहिश्ती पोर्ट टर्मिनल चाबहार के विकास हेतु किया गया है । ईरान के चाबहार में दो मुख्य बंदरगाह अवस्थित हैं-'शाहिद बेहेश्ती' और 'शाहिद कलंतरी' ।

ईरान का एकमात्र समुद्री बंदरगाह चाबहार है। चाबहार बंदरगाह ईरान के सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत में मकरान तट पर स्थित है।

शाहिद कलंतरी बंदरगाह :– इस बंदरगाह का विकास 1980 के दशक में हुआ था।

शाहिद बेहिश्ती बंदरगाह :– इस बंदरगाह को विकसित करने का प्रस्ताव ईरान के द्वारा भारत के समक्ष रखा गया। भारत ने इस परियोजना की सराहना की तथा इस बंदरगाह को विकसित करने पर अपनी सहमति व्यक्त की।

इस बंदरगाह को विकसित करने के लिए भारत और ईरान की ओर से क्रमशः इंडिया पोर्ट ग्लोबल लिमिटेड (IPGL) तथा ईरान के पोर्टस एंड मैरीटाइम ऑर्गनाइजेशन (PMO) के मध्य हस्ताक्षर किए गए है ।

इंडिया पोर्ट ग्लोबल लिमिटेड (IPGL) बंदरगाह को विकसित और ऑपरेशनल करने के लिए लगभग 120 मिलियन डॉलर का निवेश करेगा।

चाबहार बंदरगाहः

चाबहार बंदरगाह ईरान का एक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय बंदरगाह है यह ईरान के दक्षिणपूर्व में सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है यह बंदरगाह ओमान की खाड़ी में अवस्थित एक गहरे पानी का बंदरगाह है।

ईरान के चाबहार बंदरगाह का समयकालः–

1973: ईरान ने 1973 में चाबहार बंदरगाह का उद्घाटन किया ।

उद्घाटन का उद्देश्य :– अपनी सामरिक दृष्टि को प्रदर्शित करते हुए चाबहार बंदरगाह का उद्घाटन ईरान द्वारा किया गया ।

2008: इस वर्ष भारत एवं ईरान ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए ।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का उद्देश्य :– चाबहार तथा एक पारगमन गलियारे का विकास करना।

2012: भारत द्वारा इस बंदरगाह के विकास के कार्य को प्रारम्भ करने के लिए 100 मिलियन डॉलर देने की सहमति व्यक्त की।

2016: एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए

इस त्रिपक्षीय समझौते ने भारत, ईरान एवं अफगानिस्तान सामिल थे

इस त्रिपक्षीय समझौते का उद्देश्य :– चाबहार बंदरगाह को अंतर्राष्ट्रीय परिवहन तथा पारगमन गलियारे के रूप में विकसित और स्थापित करना ।

Result Mitra

2017: इस बंदरगाह का प्रयोग करके भारत ने अफगानिस्तान तक अपनी पहुंच को सुनिश्चित किया और 2017 में पहले गेहूं का शिपमेंट भेजा।

2018: इस बंदरगाह को विकसित करने में भारत की भूमिका को देखते हुए तथा भारत द्वारा किए गए कार्यों को देखते हुए ईरान ने इस बंदरगाह के परिचालन और नियंत्रण का कार्य भारत की एक कंपनी को सौंपा

ईरान ने भारत की बढ़ती भागीदारी को दर्शाते हुए चाबहार बंदरगाह के पहले चरण का परिचालन नियंत्रण भारत की पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड को दे दिया।

2019: वर्ष 2019 में चाबहार बंदरगाह की महत्त्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए तथा भारत द्वारा यहां किए गए कार्यों से प्रभावित हो कर अमेरिका ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण प्रयासों को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से चाबहार बंदरगाह के महत्व को पहचानते हुए ईरान पर अपने प्रतिबंधों से चाबहार बंदरगाह को छूट प्रदान की ।

चाबहार बंदरगाह और हालिया विकासः

- भारत द्वारा इस बंदरगाह पर उपकरण आपूर्तिः प्रारंभ की गई है जिसके तहत भारत ने छः हार्बर क्रेन की आपूर्ति सुनिश्चित की।
- इन छः हार्बर क्रेन में से दो 140 टन क्षमता वाली तथा चार 100 टन क्षमता वाली हैं
- इसके साथ ही 25 मिलियन डॉलर की कीमत के अतिरिक्त उपकरण की आपूर्ति भी की जा रही है।
- दिसंबर, 2018 से, इंडिया पोर्ट ग्लोबल लिमिटेड (IPGL) कंपनी अपनी सहायक कंपनी इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल की मदद से फ्री जोन (IPGCFZ) के माध्यम से चाबहार बंदरगाह का प्रबंधन का कार्य कर रहा है।

चाबहार बंदरगाह का महत्वः

भारत इस बंदरगाह द्वारा अफगानिस्तान, मध्य एशिया एवं काकेशस के बाजारों तक अपनी पहुंच को सुनिश्चित करेगा।

चाबहार बंदरगाह अपने रणनीतिक स्थान के कारण क्षेत्रीय जुड़ाव, आर्थिक विकास एवं भू-राजनीतिक प्रभाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

यह बंदरगाह, चीन द्वारा पाकिस्तान में विकसित किए जा रहे ग्वादर जैसे बंदरगाह को काउंटर करने के रूप में देखा जा सकता है।

चीन आक्रामक नीति के तहत बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से दक्षिण एशिया में अपनी पहुंच को बढ़ा रहा है जो भारत की स्वतंत्रता और संप्रभुता के लिए एक गंभीर चुनौती पैदा कर रहा है जिस कारण भारत इस चुनौती को संतुलन में लाने के लिए चाबहार बंदरगाह का उपयोग कर सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC)

Result Mitra

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा:

यह गलियारा मल्टी-मोड ट्रांज़िट सिस्टम है जिसकी कुल लंबाई 7,200 किलोमीटर है

इस परिवहन योजना के अंतर्गत नौवहन, रेलवे और सड़क मार्गों के द्वारा एशिया तथा यूरोप के महत्वपूर्ण भागों को जोड़ना है

इस परिवहन गलियारे के द्वारा भारत, ईरान, अज़रबैजान, रूस,अज़रबैजान, आर्मेनिया, कज़ाखस्तान, किर्गिज़स्तान, ताजिकिस्तान, तुर्की, यूक्रेन, सीरिया, बेलारूस और ओमान मध्य एशिया और यूरोप को आपस में जोड़ना है।

इस परिवहन योजना को 12 सितंबर, 2000 को शुरू किया था जिसका मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों के बीच परिवहन सहयोग को बढ़ावा देना था इसका शुभारंभ ईरान, भारत और रूस द्वारा सेंट पीटर्सबर्ग में गया था।

समय के साथ अन्य राष्ट्रीय भी इस परियोजना में दिलचस्पी लेने लगे है जैसे की:-
बुल्गारिया इस परिवहन योजना में पर्यवेक्षक राज्य के रूप में शामिल हुआ है तो वहीं लातविया और एस्टोनिया भी इसमें शामिल होने की इच्छा जता चुके है।

Result Mitra

Topic 3 :– डेंगू की नई वैक्सीन TAK-003

चर्चा में क्यों :– हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के द्वारा डेंगू की नई वैक्सीन TAK-003 को प्रीक्वालिफाई किया गया है

TAK-003 वैक्सीन के बारे में :-

यह वैक्सीन लाइव एटेन्युएटेड वैक्सीन का एक प्रकार है।
इस वैक्सीन को फार्मा कंपनी टेकेडा ने विकसित किया है यह एक जापानी फार्मा कंपनी है

इस वैक्सीन को मुख्य रूप से डेंगू बीमारी के लिए उत्तरदाई वायरस से संबंधित चार सीरोटाइप्स के दुर्बल वैरिएंट से लड़ने के लिए तैयार किया गया। यह डेंगू से संबंधित दूसरी ऐसी वैक्सीन है जिसने WHO की प्रीक्वालिफिकेशन को प्राप्त किया है।

Note :– इस प्रकार के प्रीक्वालिफिकेशन को प्राप्त करने वाली पहली वैक्सीन CYD- TDV है।

यह वैक्सीन 6 वर्ष से 16 वर्ष की आयु के बीच के बच्चों को देने की WHO के द्वारा सिफारिश की गई है।

साथ ही WHO ने सिफारिश की है की आरंभ में इस वैक्सीन को डेंगू के अधिक मामले वाले स्थानों और संचरण की उच्च तीव्रता वाले क्षेत्रों में लगाया जाए

WHO वैक्सीन प्रीक्वालिफिकेशन :-

यह एक सूची है जिसमे सकारात्मक परिणाम देने वाली वैक्सिनो को शामिल किया जाता है

इस सूची में शामिल करने से पहले संबंधित वैक्सीन को वैक्सीन सैंपल के परीक्षण, प्रासंगिक डेटा के मूल्यांकन, और वैक्सीन विनिर्माण केंद्रों का WHO द्वारा निरीक्षण किया जाता है तब किसी वैक्सीन को वैक्सीन इस सूची में किया जाता है।

WHO द्वारा वैक्सीन प्रीक्वालिफिकेशन की प्रक्रिया को 1987 में अपनाया गया था।

वैक्सीन प्रीक्वालिफिकेशन के उद्देश्य :- संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों द्वारा चलाए जाने वाले वैक्सीन के वितरण की गुणवत्ता को सुनिश्चित करना।

WHO द्वारा किसी वैक्सीन को इस सूची में शामिल करने का अर्थ यह नहीं है की WHO ने उक्त वैक्सीन के विनिर्माण केंद्रों को मंजूरी दे दी है। यह अनुमति पूर्ण रूप से देशों के राष्ट्रीय विनियामक प्राधिकरणों के अनन्य क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आता है

डेंगू से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य:-

डेंगू मच्छर से होने वाली बीमारि है जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्र मे अधिक फैलती है

Result Mitra

डेंगू वायरस (जीनस फ्लेवीवायरस) के कारण होने वाली बीमारी है।

इसका प्रसार मच्छरों की कई जीनस एडीज़ (Genus Aedes) प्रजातियों के कारण होता है , डेंगू मुख्यत संक्रमित मादा मच्छर, विशेषत एडीज एजिप्टी (Aedes Aegypti) के काटने से होता है ।
।

यह मच्छर न सिर्फ डेंगू बल्कि चिकनगुनिया और जीका संक्रमण को भी फैलाता है।

रोगजनक / पैथोजन : डेंगू वायरस को अलग-अलग विभाजित किया गया है जैसे DEN-1, DEN-2, DEN-3 और DEN-4.

रोगवाहक (वेक्टर):
जबकि यूरोप में यह वायरस एडीज एल्बोपिक्टस (टाइगर मॉस्किटो) द्वारा यह संक्रमण फैलता हैं।

डेंगू के लक्षणःडेंगू में फ्लू जैसे लक्षण होते हैं और यह 2-7 दिनों तक रहता है। तेज सिरदर्द, तेज बुखार, आंखों के पीछे वाले हिस्से में दर्द,ग्रंथियों में सूजन, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द आदि। गंभीर मामलों में मृत्यु भी हो सकती है।

इसका संक्रमण संक्रमित गर्भवती माता से उसके बच्चे में, रक्त दान से, अंग दान से और ट्रांसफ्यूजन के माध्यम से भी फैल सकता है।

इस वायरस के प्रभावित मुख्य क्षेत्र :– यह वायरस मुख्यत उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु वाले क्षेत्रों में देखा जाता हैं।

सबसे अधिक मामले शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में और मुख्यत एशिया, अफ्रीका एवं अमेरिका कॉन्टिनेंट में दर्ज किए जाते हैं

डेंगू का इलाज क्या है?

डेंगू बुखार के लिए कोई टीका या विशिष्ट दवा उपलब्ध नहीं है। मरीजों को चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए, आराम करना चाहिए और खूब सारे तरल पदार्थ पीने चाहिए।

बुखार कम करने और जोड़ों के दर्द को कम करने के लिए पैरासिटामोल या अपने डॉक्टर से परामर्श लेना चाहिए ।

Topic 4 :– काँवर झील

Result Mitra

इसको कबरताल आर्द्रभूमि, कंवर ताल, कनवार ताल या कावर ताल के नाम से भी जाना जाता है यह बिहार राज्य के बेगूसराय जिले में स्थित मीठे पानी की एक उथली झील है यह झील लगातार सूखती जा रही है।

कंवर झील या ताल के बारे में :-

काँवर झील मीठे पानी की एक प्राकृतिक आर्द्रभूमि है।
यह झील गंडक, बाया और करेह नदियों से पानी प्राप्त करती है।

इस झील को 2020 में अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमि का दर्जा प्राप्त हुआ। यह झील बिहार का पहला रामसर स्थल है। यह मध्य एशिया से आने वाले प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण आवास स्थल है।

इस स्थल पर लगभग 58 से 60 प्रकार के प्रवासी पक्षी आराम और भोजन के लिए रुकते हैं। यहां पाई जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियांः भारतीय गिद्ध, लाल सिर वाला गिद्ध और श्वेत गिद्ध ।

इस झेल का महत्त्वः

- प्रवासी पक्षियों के लिए आश्रय स्थल प्रदान करना ।
- तलछट के जमाव स्थल के रूप में कार्य करना।
- आजीविका का अवसर उपलब्ध कराना।
- मछलियों व उभयचरों को प्राकृतिक निवास प्रदान करना ।

Result Mitra